

विक्रम संवत्-२०३६, भाद्रपदा सुद-३, शुक्रवार, ता. १२-९-१९८०
पयनामृत- ३७८. प्रपचन नं. ३१

ईसमें १६० पृष्ठ है. तीसरा पैराग्राफ है. 'निजस्वप्नधाममें...' पहला आया. ३७८ का तीसरा पैराग्राफ. दो पैराग्राफ चले हैं. 'निजस्वप्नधाम...' अतीन्द्रिय आनंद और अतीन्द्रिय ज्ञान जिसकी सत्तामें है, मौजूदगीरूप वही है. अनंत ज्ञान, ज्ञानस्वप्न है लेकिन वह ज्ञान अनंत है. उसकी कोई मर्यादा नहीं है. जैसा आनंद. उसकी सत्ता क्षेत्र थोड़ा, असंख्य प्रदेशमें लेकिन गुण अनंत अपरिमित गुण जिसमें है, जैसा निजस्वप्नधाम. निजस्वप्नधाम. आला..! 'रमनेवाले मुनिराजको भी पूर्ण वीतरागदशाका अभाव होनेसे विविध शुभभाव होते हैं.' उनको भी विविध शुभभाव तो होते हैं. आलाला..!

'उनके महाप्रत,...' यह शुभभाव. 'अष्टाईस मूलगुण,...' शुभभाव 'पंचाचार,...' व्यवहार. व्यवहार पंचाचार. बाकी निश्चय पंचाचार भी है. प्रपचनसार. पहले शुरुआतमें निश्चय पंचाचार (आते हैं). और यह व्यवहार पंचाचार शुभभाव. 'स्वाध्याय,...' शास्त्रका स्वाध्याय करना वह भी शुभभाव है. 'ध्यान ईत्यादि संबंधी...' ध्यान यानी आत्माका विचार, विकल्प. ध्यान यानी निर्विकल्प नहीं. परंतु अंदर में ध्यान करूं. चैतन्य आनंद स्वप्न है. जैसी जो विकल्प दशा उसको यहां ध्यान कहते हैं. 'ईत्यादि संबंधी शुभभाव आते हैं...' आलाला..! वेदनमें भी शुभभाव है. वेदनमें शुद्धभाव और शुभभावका वेदन है. अशुभका भी थोड़ा वेदन है. परंतु वेदनका आलंबन नहीं है. जिसका आलंबन (है), उसका वेदन नहीं है. जिसका वेदन है, उसका आलंबन नहीं है. आलाला..! शुद्ध पर्याय, शुभभाव, अशुभ वेदनमें है. शुद्ध वेदन भी है, अशुभ और शुभका वेदन है. वेदनका अवलंबन नहीं है, वेदनका आलंबन नहीं है. और जिसका आलंबन है उसका वेदन नहीं है. आलाला..! ध्रुवस्वप्न. स्वधाम कहा न? निजस्वप्नधाममें. रहना भले वहां रहे, उसका वेदन नहीं है. चंद्रभाई! वेदन पर्यायका है. 'निजस्वप्नधाममें रमनेवाले...' जैसा कहा न? मुनिराजको जैसे शुभभाव आते हैं. 'जिनेन्द्रभक्ति-श्रुतभक्ति-गुरुभक्तिके उद्घासमय भाव भी आते हैं.' उद्घास, प्रेम और उद्घास दिग्भनेमें भी आते हैं.

'हे जिनेन्द्र!' पञ्चनंटी आचार्य कहते हैं. पञ्चनंटी मुनि. 'आपके दर्शन होनेसे,

आपके चरणकमलकी प्राप्ति होनेसे, मुझे क्या नहीं प्राप्त हुआ?' है तो पर. परंतु ऐसा भी व्यवहार आता है. परंतु वह व्यवहार अवलंबन करने लायक नहीं है. आलाला..! अवलंबन करने लायक तो एक निश्चयम शुद्ध स्वप्न (है). ऐसी चीज मुनिको भी आती है, ऐसा कहते हैं. हे नाथ! 'मुझे क्या नहीं प्राप्त हुआ?' यह तो व्यवहार आया. आपकी प्राप्ति लुयी, प्रभु! 'मुझे क्या नहीं प्राप्त हुआ?' यह तो वेदनकी, शुभभावकी वेदनकी दशाकी बात है. आलाला..! उस समय भी जिसका वेदन नहीं, उसका आवलंबन तो कायम रहता है. ध्रुवका आवलंबन तो कायम रहता है. भले वह वेदनमें न आवे. वेदनमें ध्रुव आता नहीं. आलाला..! और वेदनमें पर्याय आती है उसका आवलंबन नहीं.

यह शुभभाव आता है, हे प्रभु! 'आपके दर्शन होनेसे, आपके चरणकमलकी प्राप्ति होनेसे, मुझे क्या नहीं प्राप्त हुआ?' ऐसा कहते हैं. क्या नहीं प्राप्त हुआ? वह तो विकल्प है. वेदनमें तो विकल्प है. समझमें आया? लेकिन उस समय भी आवलंबन तो ध्रुवका है. आपके चरणकमल प्राप्त हुआ, मुझे क्या नहीं प्राप्त लुयी? यह तो एक शुभभावका वेदन है तो वह बात आती है. लेकिन अंतरमें जो चीज है, जिसका वेदन नहीं, परंतु जिसका आवलंबन एक क्षण हटता नहीं.. आलाला..! जिसका आवलंबन एक समय हटता नहीं. जिसके वेदनमें चाहे तो शुभ वेदन हो, शुद्धका वेदन हो, अरे..! अशुभका भी थोड़ा भाव आ जाय. मुनिको भी आर्तध्यान आ जाय. पंचम गुणस्थानमें तो रौद्रध्यान भी आ जाय. वेदन है, आवलंबन नहीं. आलाला..!

आधार प्रभु एक समयमें निश्चय स्वप्नधाम उसका अवलंबन और आधार तो कायम एक ही रहता है. आलाला..! ऐसी दशामें आते हैं. प्रभु! आपके दर्शनसे मुझे क्या नहीं हुआ? ऐसी भाषा भी आती है, विकल्प भी आता है. फिर भी उसका अवलंबन नहीं. आलाला..! अवलंबनमें तो अंदर प्रभु ज्ञायक वस्तु ज्ञायककी धारा चलती है, उसका वेदन है, आवलंबन ज्ञायकका है. शुभ-अशुभका भी नहीं और शुद्धका भी आवलंबन नहीं. आलाला..! ऐसी चीज है.

'आप मिलनेसे मुझे सब कुछ मिल गया. जैसे अनेक प्रकारसे श्री पद्मनादि आदि मुनिवरोंने जिनेन्द्रलक्तिके स्रोत बलाये हैं.' प्रवाल बलाया है. 'जैसे जैसे अनेक प्रकारके शुभभाव मुनिराजको भी लठ बिना आते हैं.' शुभ नहीं लाउंगा तो दुर्गतिमें जाउंगा, ऐसी लठ नहीं, ऐसा लक्ष्य भी नहीं है. आलाला..! वह तो ऐसा सहज भाव, शुद्धके अवलंबनकी पूर्णता नहीं होनेसे, शुद्धकी पूर्णता द्रव्यकी

नहीं होनेसे ऐसा भाव वेदनमें आता है. फिर भी वेदनकी मुज्यता नहीं (होती). आह्ला..! समझमें आया? मुज्यता तो भगवान् द्रव्य स्वभाव, निज स्वरूपधाम (की है). आह्ला..! निज स्वरूपधाम. भले असंख्य प्रदेश हों, परंतु असंख्य प्रदेशमें भी अनंत.. अनंत.. अनंत गुण विराजते हैं. उसका अेकरूप, अनंत गुणका अेकरूप, उसका आवंजन ऐसी दशामें भी, शुभभावकी दशामें भी, अरे..! कभी अशुभ परिणाम आता है, मुनिराजको अशुभ तो गिननेमें आया नहीं. उन्हें आर्तध्यान होता है, फिर भी गिननेमें नहीं आया है. गृहस्थको गिननेमें आया है. परंतु गृहस्थको भी अशुभभावके कालमें भी वेदन भले उसका हो, वेदनमें आवंजन नहीं है. आह्ला..! आवंजन तो वेदन नहीं है उस चीजका आवंजन है. वेदन नहीं है, उस चीजका आवंजन (होता है). वेदन है उस चीजका आवंजन नहीं है. आह्ला..! ऐसा मार्ग है.

द्रव्य और पर्याय, दूके बीच (जात है). पर्यायका वेदन और द्रव्यका आवंजन. वेदनका आवंजन नहीं और द्रव्यका-ध्रुवका वेदन नहीं. आह्ला..! दो चीज भिन्न है. परसे तो भिन्न है ही. प्रवचनसारकी १०१ गाथा ली न? उत्पाद ध्रुवके कारण नहीं. आह्ला..! उत्पाद ध्रुवके कारण नहीं और व्यय उत्पादके कारण नहीं, और उत्पाद ध्रुवके कारण नहीं, परंतु ध्रुव उत्पादके कारण नहीं. आह्ला..! १०१ गाथा, प्रवचनसार. भगवान्की दिव्यध्वनिका सार. आह्ला..! उत्पाद-व्ययका परिणाम आता है. क्योंकि तीन भिन्नकर उत्पादव्ययध्रुव युक्तं सत्, तीनों भिन्नकर सत् है. फिर भी उत्पाद-व्यय सत्, उसका आवंजन नहीं. उसीकी चीजमें उत्पाद-व्ययका आवंजन नहीं है. आवंजन तो निज धामका ही है. आह्ला..!

यह कहते हैं, लठ बिना शुभभाव आ जाते हैं. आवंजन तो ध्रुव शुद्धका ही है. 'साथ ही साथ ज्ञायकके...' देजा! आया. 'साथ ही साथ ज्ञायकके उग्र आवंजनसे...' आवंजन तो उसका है. आह्ला..! ऐसे भावमें भी साथ ही साथ, साथ ही साथ. आवंजन पीछे और शुभभाव पहले ऐसा भी नहीं. साथ ही साथ. शुभभावके साथमें ही 'ज्ञायकके उग्र आवंजनसे मुनियोज्य उग्र ज्ञातृत्वधारा भी...' आह्ला..! ज्ञायक स्वभावकी अवंजन दशाके कारण ज्ञातृधारा भी सतत चलती है, ऐसे शुभभावके कालमें भी. आह्ला..! ज्ञातृधारा यह परिणति है, पर्याय है. परंतु शुभभावके कालमें भी ज्ञायककी ज्ञातृधारा चलती है. आह्ला..! 'सतत चलती ही रहती है.' आह्ला..! निरंतर शुभ-अशुभभावके साथमें, साथमें, आगे-पीछे नहीं, साथमें मुनियोज्य ज्ञातृधारा (चलती ही रहती है). आह्ला..! आवंजन तो ध्रुव(का है), परंतु ज्ञातृधारा परिणति-

पर्याय है. ज्ञातृधारा वह उत्पाद-व्ययकी पर्याय है. आलाला..! वह भी सतत चलती रहती है. आलाला..!

‘साधकको-मुनिको तथा सम्यग्दृष्टि श्रावकको...’ दोनोंको. साधक यानी दो-मुनि अथवा सम्यग्दृष्टि श्रावक. ‘जो शुभभाव आते हैं वे ज्ञातृत्वपरिणतिसे विद्ध स्वभाववाले होनेके कारण...’ परिणतिसे विद्ध, एं. आवंजन तो त्रिकाल ज्ञायकका है. उसके अवलंजनसे ज्ञातृधारा चली, निर्मल धारा चली, उसके साथ शुभभाव आदि भी है. ‘विद्ध स्वभाववाले होनेके कारण...’ दोनोंका विद्ध स्वभाव है. आलाला..! पर्यायमें, एं! त्रिकालीका अवलंजन है, परंतु परिणतिमें ज्ञातृधारासे विद्ध शुभभाव विद्ध भाव है. आलाला..! ज्ञातृधारा ज्ञायककी परिणति है-पर्याय है. उसके साथ शुभभाव है, परंतु वह विद्ध है. आया न? ‘ज्ञातृत्वपरिणतिसे विद्ध स्वभाववाले होनेके कारण उनका आकुलताइपसे-दुःखइपसे वेदन होता है,...’ आलाला..! ज्ञायकके अवलंजनसे ज्ञायक परिणति जो पर्याय उत्पन्न हुयी, उसका वेदन सुखइप है. और उसके साथ जो शुभभाव आया, उसका वेदन विद्ध आकुलता है. आलाला..! अंक समयमें दो (भाव). अंक समयमें तीन. ज्ञाताका अवलंजन, उस अवलंजनकी धारा, उससे शुभभाव विद्ध धारा. तीनों चलते हैं साथमें. आलाला..! ऐसा मार्ग.

‘उनका आकुलताइपसे-दुःखइपसे वेदन होता है,...’ ज्ञातृधाराकी परिणतिकी अपेक्षासे, अवलंजन तो ज्ञायकका है, उसका तो वेदन है नहीं, उसके आवंजनसे जो निर्मल ज्ञातृधारा शुद्ध परिणति-धर्मधारा जो प्रगट हुयी, उससे शुभभाव विद्ध भाव है. आकुलताइपसे-दुःखइपसे वेदन होता है. आलाला..! शुभभाव आकुलता-दुःखइप. समयसारमें आता है. समयसारमें है न? अध्यानसान आदि दुःखमय है. जितने अध्यवसाय विकल्प उठते हैं, उसे दुःखमें डाला है. आलाला..! वह प्रभुमें है नहीं, उसकी शुद्ध परिणतिमें वह है नहीं. आलाला..! सूक्ष्म बात बहुत, भाई! ज्ञायक त्रिकालमें तो है नहीं. परंतु त्रिकालकी धारासे जो ज्ञातृधारा परिणति-पर्याय प्रगट होती है वह ध्रुवधारा है. आलाला..!

चैतन्य त्रिकालीकी धारा तो ध्रुवधारा है. उसके अवलंजनसे उत्पन्न हुयी वह अध्रुवधारा है. परंतु वह आनंद और सुखइप है. उसके साथ शुभराग है, उसकी भी साथमें धारा है. परंतु वह दुःखइप है. आलाला..! इसमें विरोध आता था न? दीपचंद्रज सेठिया. ज्ञानीको दुःख होता ही नहीं (ऐसा मानते थे). दुःख वेदे वह तीव्र कषायवाला अज्ञानी वेदे. दुःखका वेदन नहीं होता, ऐसा कहते थे. आलाला..!

यहां तो कहते हैं, जब तक वीतरागता न हो, तब तक तीन कायम चलते

हैं. त्रिकालका अवलंबन, उसकी धारा परिणति निर्मल और शुभ या अशुभमेंसे कोई भी अेक भाव. आलाहा..! और उस शुभ-अशुभभावका वेदन द्रुःभ. आत्मा ज्ञायक आनंदमय है, तो आनंदमयके अवलंबनसे उत्पन्न लुयी, यहां ज्ञातृत्वधारा कला, वह आनंदधारा है. आलाहा..! ज्ञायकभाव लिया न? तो ज्ञायकके कारण ज्ञातृत्वधारा लिया. आनंदस्वरूप वो तो वह आनंदधारा है. ज्ञानस्वरूप वो तो ज्ञानधारा है. श्रद्धास्वरूप वो तो समकितधारा है. वीतरागस्वरूप वो तो वीतरागधारा है. आलाहा..! ऐसी सूक्ष्म बात. पैसेमें यह कब सुना है? आलाहा..! तीन बेंगे, नीचे तीन बेंगे.

‘हेयर्प ज्ञात लोते हैं,...’ धर्मको शुभभाव आता है, परंतु हेयर्प भासता है, द्रुःभर्प भासता है. वेदनमें द्रुःभ है. आलाहा..! अकेला हेय है, ऐसा नहीं है. परंतु साथमें वेदन भी नहीं है. अकेला वेदन भी नहीं, साथमें हेय भी है. वेदन तो निर्मल परिणतिका भी है और यह मलिन परिणामका भी वेदन है. परंतु अेक हेय है. आलाहा..! परिणति है और वेदन है, ँसलिये हेय है, ऐसा नहीं. परिणति तो निर्मल धारा भी है. आलाहा..! शुद्ध चैतन्यवस्तु भगवान, उसके अवलंबनसे, उसके ध्येयसे जे ध्यानकी निर्मल पर्याय उत्पन्न लुयी, वह पर्याय है. उसके साथ-साथ शुभराग लोता है, पहले शुभकी बात ली है. पहले शुभाशुभ लिया. प्रथम पंक्ति, ँस ओर. ‘गृहस्थाश्रम संबंधी शुभाशुभ परिणाम लोते हैं.’ प्रथम पंक्ति. १६० पृष्ठ पर प्रथम पंक्ति. ‘गृहस्थाश्रम संबंधी शुभाशुभ परिणाम लोते हैं.’ इर्क है? पृष्ठमें इर्क है. गुजराती है? ठीक. यह लिन्टी है. पहले बात ली है. शुभाशुभ भाव, शुभाशुभ परिणाम लोते हैं. गृहस्थाश्रममें शुद्ध, शुभ और अशुभ तीनों लोते हैं. आलाहा..!

यहां कलते हैं, ‘हेयर्प ज्ञात लोते हैं, तथापि उस लूमिकामें आये बिना नहीं रहते.’ आलाहा..! लूमिका नीचेकी दशा है. स्वामी कातिकियमें तो ऐसा आता है कि ऐसी शुद्ध परिणति लो, परंतु केवलज्ञानीकी परिणति जैसी नहीं है तो यहां ऐसा कला है, ले प्रभु! लम तो पामर हैं. वस्तुसे प्रभु है, पर्यायसे पामर है. ऐसा पाठ है. स्वामी कातिकिय. प्रभु! कलां चारित्रकी परिणति और कलां केवलकी अवस्था! सम्यग्दर्शनकी परिणति तो पामर है. आलाहा..! मिथ्यादष्टिकी तो बात ली क्या करनी? पामरके साथ, उत्कृष्ट पामरके साथ... उत्कृष्ट शक्ति प्रगट लुयी लो उसके साथ मिलान करके कलना है. मिथ्यादष्टिको किसके साथ मिलान करे? आलाहा..! और यहां तक चला है न? षट्पंजागममें. सम्यग्धारा, त्रिकाल ज्ञायक स्वरूपसे सम्यग्ज्ञान धारा आयी, उसमें जे मतिज्ञान है वह केवलज्ञानको बुलता है. ऐसा पाठ है,

षट्प्रभंडागममें. मतिज्ञान जो निर्मल प्रगट हुआ, त्रिकावी ज्ञायकभावमें तो ध्रुवता है. उसके अवलंबनसे जो मति-श्रुतज्ञान उत्पन्न हुआ, वह पर्याय-परिणति है. वह पर्याय ऐसा कलती है, केवलज्ञानको बुलाओ, केवलज्ञान आओ, केवलज्ञान आओ. आलाला..!

मुमुक्षु :- पामर पर्याय प्रभुको बुलाती है?

उत्तर :- हां. पामर पर्याय .. को बुलाती है. हमें उत्कृष्ट .. लेना है. ऐसा कलते हैं, पामर पर्याय उत्कृष्ट .. वाली पर्यायको बुलाती है? पामर ही बुलाती है. परम पुरुषार्थ बुलाये कहांसे? परम पुरुषार्थ तो पूर्ण हो गया. आलाला..! केवलज्ञानी भगवानको तो परम पुरुषार्थ पूर्ण हो गया. आलाला..! बुलाती हैं, उसका अर्थ ही यह हुआ कि हमारी परिणति बहुत छोटी है. हे नाथ! अपकी परिणति बड़ी है. हमारी परिणति ज्ञान, सम्यग्दर्शनकी परिणति आपकी परिणतिके पास तो पामर है. आलाला..! शुभभावकी तो बात ही क्या करनी? आलाला..! ऐसी बात है.

‘साधककी दशा...’ अब लेते हैं. ‘साधककी दशा...’ सम्यग्दर्शनसे साधककी दशा उत्पन्न होती है. फिर यौथे, पांचवे, छठे आदि सब. अंतरमें निर्मलानंद प्रभु शुद्ध चैतन्य स्वरूप, उसके आश्रयसे साधकपना जो प्रगट हुआ, वह साधकदशा ‘अेकसाथ त्रिपटी (-तीन विशेषताओंवाली) है.’ आलाला..! क्या है? साधककी दशा-धर्मकी दशा यौथे, पांचवे, छठे आदि अेकसाथ त्रिपटी-तीन विशेषताओंवाली है. ‘अेक तो, उसे ज्ञायकका आश्रय अर्थात् शुद्धात्मद्रव्यके प्रति जोर निरंतर वर्तता है...’ आलाला..! ज्ञायक अकेला ज्ञान स्वभाव जो अंतर्भुजमें पूर्ण है, पर्यायमें बाहरमें आया नहीं, ऐसा प्रभु अंदर.. आलाला..! ‘उसे ज्ञायकका आश्रय अर्थात् शुद्धात्मद्रव्यके प्रति जोर निरंतर वर्तता है...’ आलाला..! बडेका आश्रय कभी छोडते नहीं. संसारमें भी बडेका आश्रय छोडता नहीं. आलाला..!

बडा प्रभु ध्रुव, उसका आश्रय कभी छूटता नहीं. ‘उसे ज्ञायकका आश्रय अर्थात् शुद्धात्मद्रव्यके प्रति जोर निरंतर वर्तता है...’ धर्मकी दृष्टिमें जो ज्ञायक आया है. उसमें पर्यायमें जोर द्रव्यकी ओर निरंतर वर्तता ही है. पर्यायका जुकाव द्रव्य तरङ्ग ही वर्तता है. आलाला..! निर्मल पर्याय समीपमें वर्तती है. राग असमीप-दूर वर्तता है. आलाला..! ‘ज्ञायकका आश्रय अर्थात् शुद्धात्मद्रव्यके प्रति जोर...’ जोर नाम पुरुषार्थ उस ओर गति करता ही है. करना पडता नहीं. भेदज्ञान हुआ तो पुरुषार्थ उस ओर चलता ही है. आलाला..!

‘जिसमें अशुद्ध तथा शुद्ध पर्यायांशकी भी उपेक्षा होती है;...’ निरंतर जहां

आत्माके अवलंबनमें जोर वर्तता है, ध्रुवधाममें जहां जोर वर्तता है, वहां 'अशुद्ध तथा शुद्ध पर्यायशुद्धी भी उपेक्षा...' अशुद्ध परिणाम जो शुभ-अशुभ, या शुद्ध परिणाम वीतरागी पर्यायशुद्धी उपेक्षा होती है. अपने त्रिकाल स्वभावकी अपेक्षासे शुद्धताकी भी उपेक्षा (वर्तती है), अपेक्षा नहीं है. अपेक्षा त्रिकालकी, उपेक्षा वर्तमान पर्यायशुद्धी. आह्लाहा..! सूक्ष्म बात है. चैतन्य त्रिकाली सनातन लयातीवाला तत्त्व उसकी ओर जोर तो कायम वर्तता ही है. आह्लाहा..! और 'जिसमें अशुद्ध तथा शुद्ध पर्यायशुद्धी भी उपेक्षा होती है;...' अशुद्ध-शुभाशुभ राग, यहां शुभ विशेष है और शुद्ध पर्याय-सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र आदि निर्मल पर्याय जो उत्पन्न लुयी, उसकी भी शुद्धात्मद्रव्यके आश्रयसे, जोरसे उपेक्षा वर्तती है. आह्लाहा..! बहुत सूक्ष्म.

जहां शुभकी तो उपेक्षा है ही, परंतु शुद्ध पर्यायशुद्धी भी उपेक्षा है. त्रिकाली भगवान ध्रुव स्वर्पकी अपेक्षा जहां लुयी, उसका आलंबन लुआ, वहां शुभ-अशुभभाव की तो उपेक्षा ही है. आह्लाहा..! वह पहले कला कि आता है, होता है, कलते हैं, हे नाथ! मुझे आप मिले तो क्या नहीं मिला? भाषामें सब आता है, भाव भी शुभ ऐसा होता है. आह्लाहा..! वह पहले आ गया है. परंतु.. आह्लाहा..! वेदनमें अशुद्ध और शुद्ध पर्यायशुद्धी उपेक्षा रहती है. वेदन है, वेदन तो दोनोंका है, शुद्ध और अशुद्ध दोनोंका वेदन है. परंतु द्रव्यकी-ज्ञायककी दृष्टिके आलंबनसे शुद्ध और अशुद्ध पर्याय दोनोंकी उपेक्षा (वर्तती है), अपेक्षा नहीं. थोड़ेमें बहुत भर दिया है. अपेक्षा अक त्रिकालकी. चिदानंद भगवान अनंत गुणका धाम, अनंत शांतिका स्थान, उसके अवलंबनसे शुद्धाशुद्ध पर्याय, उसके अवलंबनके आगे उपेक्षा है. उसकी दरकार नहीं है. अपेक्षा नहीं, उपेक्षा है. आह्लाहा..! बड़ी कठिन बात.

शुद्ध पर्यायशुद्धी भी उपेक्षा होती है. दोनों. अशुद्धकी तो होती है. आह्लाहा..! क्योंकि दृष्टिका विषय तो द्रव्य स्वभाव है. त्रिकाली द्रव्य स्वभाव.. आह्लाहा..! अक अकेली दृष्टि जुकी है, ऐसा नहीं, अनंत पर्यायका अंश अंदर जुका है. अक ही पर्याय अंदर जुकी है, ऐसा नहीं. क्यों? कि जितने गुण हैं, उतनी प्रतीति करनेमें, अनुभव करनेमें अनंत गुण है, उन सबका अंश प्रगट होता है. अनंत जितने गुण हैं, उतने सब गुणका अंश प्रगट होते हैं. तो सम्यग्दर्शन ही प्रगट होता है, द्रव्यके अवलंबनसे अकेली सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है, ऐसा नहीं. आह्लाहा..! ऐसी बातें. धर्मकी बात. शशीभाई! आह्लाहा..!

'दूसरा, शुद्ध पर्यायशुद्धी सुभर्पसे वेदन होता है;...' उपेक्षा दोनोंकी (होती है). शुद्ध पर्याय और अशुद्ध पर्याय दोनोंकी उपेक्षा. अपेक्षा अक की भी नहीं.

परंतु वेदनमें इर्क है. 'शुद्ध पर्यायिंशका सुभद्रपसे वेदन होता है;...' शुद्ध पर्यायि जो उत्पन्न हुयी, निर्मल धर्म समकित धारा, उसका सुभद्रपसे वेदन होता है. 'और तीसरा, अशुद्ध पर्यायिंश-जिसमें...' आलाहा..! यहां तो अकेला शुभभाव लिया है. अशुद्ध पर्यायिका अंश, 'जिसमें प्रत,...' वह अशुद्ध है. 'तप,...' विकल्प है वह अशुद्ध है. 'भक्ति...' अशुद्ध अंश है. 'आदि शुभभावोंका समावेश है...' इसमें अकेले शुभभाव लिये हैं. अशुभभाव गौण करके. आलाहा..! एक पंक्ति समझनी कठिन पड़े. आलाहा..!

अपेक्षा त्रिकालकी, उपेक्षा टोकी-शुद्ध पर्यायि और अशुद्ध. वेदनमें दोनोंमें इर्क. शुद्धपर्यायिका सुभवेदन, अशुद्धकी पर्यायिका दुःभवेदन. है? 'और तीसरा, अशुद्ध पर्यायिंश-जिसमें प्रत,...' उसका अशुद्ध वेदन है. आलाहा..! 'तप,...' अशुद्ध वेदन है. तप है वह विकल्प है. निश्चयतप नहीं. व्यवहारतप-यह उपवास करना, परलक्ष्यी वह सब अशुद्ध पर्यायिंश है. अशुद्ध दशाकी वर्तमान अवस्थाका अंश है. 'भक्ति...' वह अशुद्ध पर्यायिका अंश है. 'आदि शुभभावोंका समावेश है...' आलाहा..! 'उसका-दुःभद्रपसे...' आलाहा..! प्रत, तप, भक्ति आदि शुभभावोंका दुःभद्रपसे 'उपाधिद्रपसे वेदन होता है.' आलाहा..! अशुभको नहीं लिया. शुभ लिया. समझमें आया? ऐसा वीतरागका मार्ग. वीतरागभावस्वरूप वीतरागभावस्वरूप प्रभु, उसमेंसे वीतरागभाव प्रगट होता है. अपूर्ण प्रगट होता है वह साधक है, पूर्ण प्रगट होता है वह साध्य है. तीनों वीतराग. आलाहा..!

द्रव्य-वस्तुका पूर्ण स्वरूप अकेला बिलकुल वीतराग स्वरूप है. जिसमें रागका संबंध कुछ भी नहीं है. और उसके आश्रयसे प्रगट होनेवाली जो साधक दशा, वीतरागभावका अंश है और पूर्ण डेवलज्ञान हुआ, वहां पूर्ण वीतरागता है. तीनोंमें वीतरागता आती है, कहीं राग नहीं आता. आलाहा..! समझमें आता है? भाषा तो सरल है, परंतु भाव.. आलाहा..! वीतरागप्रभु त्रिकाली वीतरागनाथ, उसके मार्गमें तीनोंमें वीतरागता आती है. वस्तु वीतरागस्वरूप, उसके आश्रयसे सम्यग्दर्शन प्रगट हो, वह वीतरागी समकित प्रगट होता है. सराग समकित नहीं.

इसकी भी तकरार करते हैं. नीचे सराग समकित है, पीछे वीतराग समकित है. सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रका अंश वीतराग है. वीतराग त्रिकाली स्वरूपमेंसे उसके अवलंबनसे प्रगट हुआ. है स्वतंत्र. पर्यायिको ध्रुवकी भी अपेक्षा नहीं. ऐसा १०१ गाथा, प्रवचनसारमें (आया). उत्पादको ध्रुवकी अपेक्षा नहीं. आलाहा..! यहां लक्ष आश्रय लिया है, ... लक्ष भी कर्तापने स्वतंत्रपने लक्ष्य लिया है. शुद्ध पर्यायि द्रव्यका

आश्रय करती है, परंतु वह पर्याय कर्तापिने स्वतंत्र कर्तापिने लक्ष्य करती है. द्रव्य है षड्विधे निरावंदनसे, मैं निराधार हूं, जैसे नहीं. आलाला..! ऐसी बात है.

प्रत्येक द्रव्यमें समय-समयमें उत्पाद-व्यय-ध्रुव धारा तीनों वर्तती है. परंतु तीनोंमें किसीको किसीकी अपेक्षा नहीं है. आलाला..! उत्पादको व्ययकी अपेक्षा नहीं, व्ययको उत्पादकी अपेक्षा नहीं. उत्पादको ध्रुवकी अपेक्षा नहीं, ध्रुवको उत्पादकी अपेक्षा नहीं. ओहोहो..! ऐसा स्वरूप पहले तो सुनना मुश्किल पड़े. सुनने मिलता नहीं. अंकांत है, अंकांत है, ऐसा कलकर (निकाव देते हैं). बात सखी है, अंकांत ही है.

प्रमाणमें नय जो निश्चय है वह अंकांत ही है. अंकांत निश्चय न हो तो प्रमाण हो जाय. आलाला..! क्या कला? द्रव्य और पर्याय लेकर प्रमाण है. नय सम्यक् अंकांत है. अंक ओर पर्याय जुड़ी है, वह सम्यक् अंकांत ही है. आला..! सम्यक् अंकांतमें पर्याय आ जाय तो पर्याय रहती नहीं. आलाला..! सम्यक् अंकांत, निश्चय सम्यक् अंकांत ही है. व्यवहार पर्याय है वह ज्ञाननेवायक है. व्यवहारसे है. नहीं है ऐसा नहीं. नय है वह तो विषयी है. विषयीका विषय तो होता ही है. दोनों नय विषयी है अर्थात् विषय करनेवाली है. विषय करनेवाली है तो उसका विषय तो है ही. व्यवहारनयका विषय तो है, आदरणीय नहीं. आलाला..! बडा कठिन काम. यह पुस्तक तो बाहर आ गया है. पूरा पढा है न? पूरा पढा? आलाला..!

साधकको वह 'दुःखरूपसे, उपाधिरूपसे वेदन होता है.' आलाला..! व्रत, तप, भक्ति आदि शुभभावो लोते हैं, परंतु वह उपाधिरूप, दुःखरूप पराश्रयसे, परसे नहीं, शास्त्रमें ऐसा शब्द बहुत आता है कि निमित्तवश, परके वश. ऐसा शब्द आता है. परसे नहीं. परके वश. स्वयं स्वतंत्र परके वश लेकर विकार करता है. निमित्त विकार करवाता है, वह बात है नहीं. शुभ-अशुभ भाव कर्मसे हुआ है, ऐसा है नहीं. समयसारमें टीकामें बहुत आता है. परवश, परके वश, निमित्तवश, निमित्तके वश. निमित्तके वशका अर्थ अपनी पर्याय स्वतंत्र निमित्तके वश होती है. निमित्तको छूती नहीं. निमित्तको छूती नहीं. निमित्त रागको छूता नहीं. परंतु राग निमित्तके आश्रयसे, लक्ष्य वहां चला जाता है. आलाला..! लवे उसे छूओ नहीं, छूओ नहीं, स्पर्श करे नहीं, फिर भी लक्ष्य करता है. आलाला..! ऐसी बात है.

यहां वह कला, आला..! 'साधकको शुभभाव उपाधिरूप लगते हैं-ईसका ऐसा अर्थ नहीं है कि वे भाव लक्ष्यपूर्वक लोते हैं.' आला..! क्या कला? धर्मीको शुभभाव आते हैं तो वे उपाधिरूप लगते हैं तो लक्ष्यसे आया है, (ऐसा नहीं है). उपाधिरूप है न? दुःखरूप है न? तो जबरन् लक्ष्यसे आ गया है, ऐसा नहीं. आलाला..!

क्या कला? 'साधकको शुभभाव उपाधिऽप लगते हैं-ईसका औसा अर्थ नही है...' उपाधिऽप लगते हैं, दुःखऽप लगते हैं, परंतु उसका औसा अर्थ नही है कि वल शुभभाव लठपूर्वक लोते हैं. अपनी पर्यायमें सलज परुषार्थकी कमजोरीसे अपनेमें लोता है. कोई कमके निमित्तसे, कोई संयोगसे लठसे (नहीं लोता). आलाला..!

नारकी जवमें ली ईतनी ठंडी और गर्मी है, ठंडी-गरमीके कारण उसको दुःख नहीं है. उस ओरके जुकावसे उसको दुःख है. ठंडी और उष्णता तो आत्माको छूते ही नहीं. आलाला..! फिर ली उसका ठंडी-उष्णताका दुःख है. उसका अर्थ क्या? आलाला..! लगवान आत्मा ठंडी-गरमीको छूता नहीं. परंतु ठंडी-गरमीकी ओर लक्ष्य करता है, अवलंबन लेता है वल दुःख है. आलाला..! अग्नि वलं छूती है, उसका दुःख नहीं है. अपनी पर्यायमें अपने कारणसे वलं परमाणु उष्ण लोता है, वल दुःख है. अपने कारणसे. अग्निका स्पर्श लुआ तो परमाणु उष्ण लुआ, औसा है नहीं. आलाला..! आया?

'साधकको शुभभाव उपाधिऽप उपाधिऽप लगते हैं-ईसका अर्थ औसा नहीं है...' वल शुभभाव परके कारण लठसे (लोते हैं). अपनी पर्यायमें करना नहीं है, फिर ली निमित्तके आधीन लोकर निमित्तसे लोता है औसा है नहीं. औसा अर्थ है नहीं. ... सलज ही कमबलद्धमें.. आलाला..! कमबलद्धमें वल परिणाम आनेका काल है तो सलज आता है. आलाला..! विकारको सलज कलते हैं. उसका लेतु, कोई निमित्तके कारणसे विकार लुआ, कम आता है वलं प्रतिकूल संयोगपना है, ईसलिये वलं दुःख लुआ औसा है नहीं. आला..! क्योंकि अक द्रव्यकी पर्याय दूसरे द्रव्यकी पर्यायको छूती नहीं. आलाला..! नारकीमें मारे, काटे वल दुःख लगे. वल दुःख नहीं है. दुःखकी दशा पर ओर जुक जाती है और अशुद्धता उत्पन्न करता है, वल दुःख है. आलाला..! लठसे लोती है औसा नहीं.

'यों तो साधकके वे ल्भाव लठलरित सलजदशाके हैं,...' देओ! वल तो उस समयकी पर्याय कमबलद्धमें आती है, जानते हैं. ... दुःख वेदते हैं. आलाला..! अक अपेक्षासे कर्ता लोता नहीं, अक अपेक्षासे कर्ता है. ४७ नय, प्रवचनसार. .. कर्ता है. किस अपेक्षासे? परिणामनकी अपेक्षासे कर्ता है. परिणामता है न? अपने कारणसे परिणामता है, परके कारणसे नहीं. विशेष कहेंगे...